धान की वैज्ञानिक खेती

झारखण्ड राज्य में धान की खेती मुख्यतः खरीफ मौसम में की जाती है। गरमा धान की खेती बहुत कम क्षेत्रों में होती है। राँची में सन् 2015-16 में 160629 हे. क्षेत्र में धान की खेती की गयी। जिसकी उत्पादकता 1140 कि.ग्रा. प्रति हे. थी।

अनुशंसित प्रभेद एवं खेती : खरीफ मौसम में धान की खेती विभिन्न प्रकार की जमीन पर की जाती है।

क) ऊँची जमीन (टांड-3 से दोन-3) के लिए : प्रभेदः अंजली, वन्दना, कलिंगा, बिरसा विकास धान 109, 110 तथा पूसा 72, 21 आदि। बीज दर : 80-100 कि.ग्रा./हे.।

ख) मध्यम जमीन (दोन-3 से दोन-2) के लिए : प्रभेद : अभिषेक, नवीन, सदाबाहर, सहभागी, ललाट, एम.टी.यू.1010 कनक, आई.आर.-64 । सभी किस्में 115-130 दिनों में पककर तैयार हो जाती हैं।

रोपाई : 20-21 दिन का बिचड़ा, 20×15 सें.मी. की दूरी पर रोपें। एक स्थान पर एक ही बिचड़ा रोपें। **बीज दर :** 40-50 कि.ग्रा./हे. तथा संकर 15 कि.ग्रा./हे. तथा एस.आर.आई. में 5-7 कि.ग्रा./हे.।

ग) नीची जमीन (दोन1) के लिए : प्रभेद : मंसूरी, सत्यम, किशोरी, राजन्द्र मंसूरी एवं साम्भा मंसूरी (वी.पी.टी.5204) स्वर्णा (एम.टी.यू.-7029) संकर एराइज 6444 आदि। ये सभी किस्में 140-145 दिनों में तैयार होती हैं। **रोपाई :** 20-21 दिन का बिचड़ा 20×15 सें.मी. पर रोपें। एक स्थान पर एक ही बिचड़ा रोपें। **बीज दर :** 40 कि.ग्रा./हे. तथा संकर धान 15 कि.ग्रा./हे. तथा एस.आर.आई. में 5-7 कि.ग्रा./हे.।

घ) सुगंधित धान : प्रभेद : सुगंधा, कामिनी, बी.आर.-9, विरसामती, पूसा सुगंधा 2,3,5 पूसा बासमती, राजेन्द्र कस्तुरी, टाईप-31 **रोपाई :** 20-21 दिन का बिचड़ा 20×15 सें.मी. पर रोपें। **बीज दर :** 25 किलोग्राम प्रति हेक्टर।

खेत की तैयारी : खेत को मिट्टी पलट हल से एक बार जोताई करने के बाद 3-4 बार देशी हल से जोताई करके कम्पोस्ट खाद को पहले से मिला देना चाहिए। उर्वरक की मात्रा को अन्तिम जोताई के समय खेत में मिला दिया जाता है।

खाद की मात्रा :

क) ऊँची जमीन (टांड) : 60:30:20 किलोग्राम एन.पी.के. प्रति हेक्टर अर्थात 105 किलोग्राम यूरिया+66 किलोग्राम डी.ए.पी. तथा 34 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश प्रति हेक्टर की दर से दें।

ख) मध्यम जमीन (दोन-3 एवं दोन-2) : 80:40:20 किलोग्राम एन.पी.के. प्रति हेक्टर अर्थात 140 किलोग्राम यूरिया+88 किलोग्राम डी.ए.पी. तथा 34 किलोग्राम म्युरट ऑफ पोटाश प्रति हेक्टर की दर से दें।

ग) नीची जमीन (दोन-1) : 120:60:40 किलोग्राम एन.पी.के. प्रति हेक्टर अर्थात 210 किलोग्राम यूरिया+132 किलोग्राम डी.ए.पी. तथा 67 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश प्रति हेक्टर की दर से दें।

घ) संकर किस्म : 120:80:60::एन.:पी.:के.: किलो प्रति हे./अर्थात 195 किलो यूरिया + 176 किलो डी.ए.पी. तथा 100 किलो एम.ओ.पी. प्रति हे. की दर से दें। 1/3 भाग यूरिया, पूरी डी.ए.पी. तथा पूरी एम.ओ.पी. की मात्रा खेत तैयारी की अन्तिम जोताई के समय खेत में मिला दी जाती है। यूरिया के शेष 2/3 भाग को दो बराबर भागों में बाँटकर एक भाग रोपाई के 20-25 दिन बाद तथा दूसरा भाग 45-55 दिन बाद दिया जाता है।

बीज उपचार : बोआई के समय बीज को 10 लीटर पानी में घोलकर क्लोरोपाइरिफास (20 ई.सी.) 50-100 मि.ली. दवा को मिलाकर 3 घण्टे तक भिंगो दें तथा बीज बोने के समय डाइथेम एम.45 या वेविस्टीन 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल में बीज को 20 मिनट तक डुबायें।

***